जप

(लेखक : श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी आश्रम)

मनुष्य अपने जीवन में न मालूम कितने अच्छे और कितने बुरे कर्म करता है । शास्त्रों में जहां अच्छे कर्मों की प्रशंसा की है वहां बुरे कर्मों की निन्दा भी की है परन्तु मनुष्य अपने सहज स्वभाव से अच्छे बुरे दोनों ही कर्मों में प्रवृत्त होता है । बुरे कर्मों के प्रायश्चित्त भी नियत किये हुये हैं । यदि प्रायश्चित्त से मनुष्य अपने किये हुये असत्कर्मों को नष्ट न करे तो अवश्य उसको उन कर्मों का पाप फल भोगना पड़ेगा । यह शास्त्र का निर्णय है । यथा :—

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ।
नाभुक्तं क्षीयते कर्म जन्म कोटिशतैरपि ॥

जब किये हुये कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है तो विचारवान् को चाहिये कि पहले ही दुष्कर्म न करे यदि किसी कारण बन ही गया तो उसका फल रूप प्रायश्चित्त पहले ही करले ।

बन्धन के हेतुभूत कर्म कायिक, वाचिक, मानसिक तीन प्रकार के होते हैं । काया से होने वाले कर्म कायिक कहे जाते हैं । शरीर के दुष्कर्मों का फल शरीर को भोगना पड़ता है, वाचिक का वाणी से और मानसिक मन से भोगना पड़ता है :—

'मानसं मनसैवायमुपभुंक्ते शुभाशुभम् ।'

मानसिक पापों का प्रायश्चित्त है — जप । भगवान् के पावन नाम का जप या किसी परम मन्त्र का जप मनुष्य के सब पापों को नष्ट कर देता है । जप भी अनेक मन्त्रों का होता है परन्तु परम जप सबसे श्रेष्ठ जप गायत्री का ही शास्त्रों में माना है । गायत्री के जप की विधि निम्न प्रकार से है यथा :—

ओंकारं पूर्वमुच्चार्य भूर्भुवःस्वस्तथैव च ।
गायत्री प्रणवश्चान्ते जपोह्येष उदाहृतः ॥

प्रथम ओंकार का उच्चारण करके फिर तीन व्याहृतियों (भूर्भुवः स्वः) को बोले, फिर गायत्री तथा अन्त में ओं को बोल कर समाप्त करे । इसे जप कहते हैं । जितने भी जप हैं सब से बड़ा जप गायत्री का ही है । इससे बड़ा जप नहीं है ।

गायत्री वेद जननी गायत्री पापनाशिनी ।
न गायत्र्या परं जाप्यमेतद्विज्ञानमुत्तमम् ।

चारों वेदों की माता गायत्री है इसलिये वेद में कोई मन्त्र गायत्री से बड़ा नहीं, गायत्री पापों को नष्ट करने वाली है । गायत्री से परे कोई जप नहीं, यही उत्तम विज्ञान है । गायत्री के जप से मनुष्य के सब प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं ।

गायत्री जपकृद्भक्त्या सर्वपापैः प्रमुच्यते ।

भक्ति से गायत्री का जप करने वाला साब पापों से मुक्त हो जाता है । जप भी

कई प्रकार का होता है ।

विधियज्ञाज्जपयज्ञो विशिष्टो दशभिर्गुणैः ।
उपांशु स्याच्छतगुणः सहस्रो मानसो स्मृतः ॥

जपयज्ञ विधियज्ञ से दश गुणा अधिक फल दायक होता है । वही यदि धीमी आवाज से किया जाय तो सौ गुणा अधिक फल दायक होता है ।और मन मन में किया हुवा हज़ार गुणा उत्तम होता है ।

ये पाकयज्ञाश्चत्वारो विधियज्ञसमन्विता ।
सर्वे ते जपयज्ञस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥

चारों पाक यज्ञ, विधि यज्ञों के समेत भी मिलकर जप यज्ञ की सोलहवीं कला के बराबर भी नहीं होते ।शास्त्रों में जप का माहात्म्य बहुत वर्णन किया है ।सायं प्रातःकाल की सन्ध्या के विषय में मनु भगवान् कहते हैं ।

पूर्वां सन्ध्यां जपंस्तिष्ठेत् सावित्रीमर्कदर्शनात् ।
पश्चिमां तु समासीनः सम्यगृक्षविभावनत् ॥

अर्थात् पहली सन्ध्या में जप करता हुवा सूर्य के दर्शन होने तक खड़ा रहे और पिछली में भली भान्ति तारों के स्पष्ट दीखने तक बैठ कर जाप करे ।

पूर्वां सन्ध्यां जपंस्तिष्ठन्नैशमेनो व्यपोहति ।
पश्चिमां तु समासीनो मलं हन्ति दिवाकरम् ॥

पहली सन्ध्या में खड़ा हो कर जप करता हुवा रात्रि के पापों को दूर करता है और पिछली में बैठ कर जप करता हुवा दिन के पापों को नष्ट करता है ।

शास्त्रों में सन्ध्या के समय जप करने का विधान लिखा है ।इससे ज्ञात होता है कि पहले सब विद्वान् गायत्री का ही जप किया करते थे ।

बहुधा लोग सन्ध्या और गायत्री में भेदबुद्धि रखते हैं परन्तु शास्त्र में कहा है :—

या सन्ध्या सैव गायत्री द्विधाभूता व्यवस्थिता ।
सन्ध्या उपासिता येन विष्णुस्तेन उपासितः ॥

जो सन्ध्या है वही गायत्री नाम से दो रूप हैं जिसने सन्ध्या करली उसने विष्णु की उपासना करली ।

बहुत से जिज्ञासु यह आशंका करते हैं कि गायत्री का ही जप क्यों किया जाय और भी तो भगवान् के अनेकों नाम हैं ? गायत्री तो यज्ञोपवीतधारी द्विज को ही जपने का अधिकार है ? इस शंका के समाधान के लिये गायत्री मन्त्र की, और मन्त्रों व नामों से विशेषता दिखलाते हैं ।

सब से प्रथम बात यह है, कि भगवान् की भक्ति में या आराधना में तीन बात होनी आवश्यक हैं ।१ स्तुति २ उपासना और ३ प्रार्थना ।प्रथम भगवान् के नाम व गुणों की स्तुति करना, फिर स्तुति करते करते उनके गुणों में ध्यानमग्न हो जाना, तन्मय हो जाना ।यह उपासना है ।फिर उपासना की त्रुटि को पूर्ण करने के लिये प्रार्थना करना ।यह ईश्वराराधन का क्रम है ।अब यह विचारना

है कि यह तीनों बातें गायत्री मन्त्र में ही दृष्टिगोचर होती हैं । वेदों में इस मन्त्र के सिवाय ये तीन विषय और किसी में मिलना असम्भव है । दूसरे गायत्री में नौ नामों से स्तुति की गई है । इससे यह सिद्ध होता है कि संख्या ९ तक ही होती है । आगे १ पर शून्य रखने से १० बनता है । अतः नौ नामों से असंख्य नामों का ग्रहण हो जाता है । इससे भी गायत्री की सबसे अधिक महत्ता प्रकट होती है । रही बात यह कि गायत्री सबको जपनी चाहिये या नहीं । इस पर प्रथम तो यही विचारना चाहिये कि जो ईश्वर न्यायकारी सबकी रक्षा करने वाला सबका माता पिता है तो फिर उसकी स्तुति, उपासना, प्रार्थना सब को करने का अधिकार क्यों न हो । दूसरे उसकी आज्ञा रूप वेद है जिसमें भगवान् आज्ञा करते हैं :—

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय स्वापचरणाय च ॥

इन मन्त्रों से स्पष्ट होता है कि भगवान् की वाणी जो वेद है उसका सबको पढ़ने का अधिकार है । और उसकी आज्ञा का जो पालन करेगा वह उसी का उद्धार करेगा । फिर यह सिद्ध होता है कि प्रत्येक मनुष्य भगवान् की प्रार्थना, उपासना, स्तुतिमय मन्त्रों को जपें ।

जप करने से अनेक महापुरुषों ने सिद्धि प्राप्त की है । किसी भक्त ने एक सन्त से प्रश्न किया की महाराज भजन में मन नहीं लगता । सन्त ने कहा — भाई तुम भजन करना चाहते नहीं मन इसी लिये नहीं लगता । हमको जब भजन का शौक लगा था तो घरकों के सो जाने पर रात्रि को उठ कर १० बजे से ४ बजे तक शीर्षासन करके गायत्री का जप किया करते और चार बजे शौच स्नान से निवृत्त हो कर फिर १२ बजे तक जप किया करते । तब भजन में मन लगने लगा । सन्त की बात सुन कर भक्त दंग रह गया । वास्तव में आश्चर्य की बात है भी । भक्त हरिदास जी तीन लाख जप करके भोजन किया करते थे । इसी प्रकार जप करते करते धीरे धीरे धारणा पक जाने पर स्वयं ही जप होने लगता है । फिर प्रतिश्वास जप होता है और मनुष्य के मल विक्षेप सब नष्ट हो कर अन्तःकरण निर्मल हो जाता है । फिर ब्रह्म की ज्योति स्पष्ट दृष्टि पड़ती है । बस फिर जीवन्मुक्त हो जाता है । परम आनन्द मनाता है ।

"एषोऽस्य परमोऽवधिः, एषास्य परमा सम्पत्"

यही इसकी परम अवधि है । यही परम सम्पत्ति है ।